

विचार बिन्दु

किसी भी हालत में अपनी शक्ति पर अभिमान मत कर, यह बहुरूपिया आसमान हर घड़ी हजारों रंग बदलता है। - हाफिज़

साहूकारी ब्याज आज भी बड़ी समस्या

आजादी के 78 साल होने को है पर गांवों में आज भी गैर संस्थागत स्रोत से ऋण प्राप्त करने वाले ग्रामीणों में से बहुत बड़ा प्रतिशत ऐसे ग्रामीणों का है जिन्हें 40 से 60 प्रतिशत तक की दर से ब्याज चुकाना पड़ता है। हालांकि पिछले एक दशक में बैंकिंग और संस्थागत ऋण सुविधाओं में तेजी से विस्तार हुआ है। जन धन खातों और संस्थागत ऋण के साथ ही सभी तरह के सरकारी अनुदान की राशि का सीधे खातों में हस्तांतरण से बैंकिंग सेवाएं अब गांवों के लिए दूर की बात नहीं रही।

नाबाई की हाल ही मार्च, 25 में जारी रिपोर्ट से जहां इस बात का संतोष होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में संस्थागत ऋण प्रवाह का दायरा बढ़ा है वहीं यह भी चिंताजनक हालात सामने आये हैं कि गैरसंस्थागत स्रोतों से जरूरत के समय कर्ज प्राप्त करने वाले ग्रामीणों में से करीब साढ़े सात फीसदी लोगों को 50 फीसदी से भी अधिक ब्याजदर से कर्ज चुकाना पड़ रहा है। इससे यह साफ हो जाता है कि एक बार गैरसंस्थागत स्रोत से कर्जदार बने तो फिर कर्ज के मकड़जाल से निकलना असंभव नहीं तो बहुत ही मुश्किल भरा होगा।

नाबाई की हाल ही मार्च, 25 में जारी रिपोर्ट से जहां इस बात का संतोष होता है कि ग्रामीण क्षेत्र में संस्थागत ऋण प्रवाह का दायरा बढ़ा है वहीं यह भी चिंताजनक हालात सामने आये हैं कि गैरसंस्थागत स्रोतों से जरूरत के समय कर्ज प्राप्त करने वाले ग्रामीणों में से करीब साढ़े सात फीसदी लोगों को 50 फीसदी से भी अधिक ब्याजदर से कर्ज चुकाना पड़ रहा है। इससे यह साफ हो जाता है कि एक बार गैरसंस्थागत स्रोत से कर्जदार बने तो फिर कर्ज के मकड़जाल से निकलना असंभव नहीं तो बहुत ही मुश्किल भरा होगा।

दरअसल चाहे ग्रामीण हो या शहरी तात्कालिक आवश्यकताएं आ ही जाती हैं जिनके लिए तत्काल रुपये पैसे की आवश्यकता होती है। अन्य कोई सहारा नहीं देखकर व्यक्ति इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रिश्तेदार, परिचित, साहूकार, दोस्त, कर्मिशन एजेंट या रुपये पैसे उधार देने वाले लोगों के सामने हाथ पसारते हैं।

एक बात और शहरों और ग्रामीण इलाकों में कुछ लोगों या संस्थाओं द्वारा दैनिक आधार पर पैसा कलेक्शन करने और दैनिक आधार पर ही ऋण देने का कार्य किया जाता है। इस तरह के लोगों या संस्थाओं द्वारा दस रुपये के ग्यारह रुपये शाम को देना आसान लगता हो पर इस किश्त का चूकना और मासिक आधार गणना की जाये तो यह बहुत महंगा होने के साथ ही जरूरतमंद लोगों की मजबूरी का फायदा उठाने से कम नहीं है।

एक बात और शहरों और ग्रामीण इलाकों में कुछ लोगों या संस्थाओं द्वारा दैनिक आधार पर पैसा कलेक्शन करने और दैनिक आधार पर ही ऋण देने का कार्य किया जाता है। इस तरह के लोगों या संस्थाओं द्वारा भले ही दैनिक आधार पर दस रुपये के ग्यारह रुपये शाम को देना आसान लगता हो पर इस किश्त का चूकना और मासिक आधार गणना की जाये तो यह बहुत महंगा होने के साथ ही जरूरतमंद लोगों की मजबूरी का फायदा उठाने से कम नहीं है।

खैर यह अलग बात है पर कहने को चाहे 40 प्रतिशत ही हो पर इनके द्वारा 20 प्रतिशत से 60 प्रतिशत की ब्याजदर से ब्याज राशि वसूलना किसी भी तरह से सभ्य समाज के लिए उचित नहीं कहा जा सकता। हालांकि देश में संस्थागत ऋण उपलब्धता बढ़ी है पर आज भी तारा रिपोर्ट के अनुसार 17.6 प्रतिशत ग्रामीणों का साहूकारों या अन्य स्रोतों पर निर्भर रहना उचित नहीं माना जा सकता।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

राशिफल शनिवार 12 अप्रैल, 2025

चैत्रमास शुक्ल पक्ष, पूर्णिमा तिथि, शनिवार विक्रम सम्वत् 2082, हस्त नक्षत्र दिन 6.08 तक, व्याधान योग रात्रि 8.40 तक, विष्टिकरण सायं 4.37तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।
ग्रह स्थिति: - सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरु-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में संचार करेगा।
यमघट योग सूर्योदय से सायं 6.08 तक है। भद्रा सायं 4.37 तक रहेगी। आज चैत्र पूर्णिमा सत्यपूर्णिमा है वैशाख स्नान आरम्भ होगा। आज श्री हनुमान जन्मोत्सव, मन्वादि, सर्वदेव दमनोत्सव है जैन ओली समाप्त होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7.44 से 9.14 तक, चर 12.28 से 2.02 तक, लाभ-अमृत 2.02 से 5.11 तक
राहूकाल: 9.00 से 10.30 तक सूर्योदय 5.56 सूर्यास्त 6.53

मेष व्यक्तिगत पारिवारिक कार्यों में धीमे रहेंगे।	सिंह आर्थिक-वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा।	धनु व्यावसायिक कार्यों का प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।
वृष परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य संपन्न हो सकते हैं।	कन्या व्यावसायिक सम्पर्क बनेंगे।	मकर व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।
मिथुन घर-परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।	तुला घर-गृहस्थी के खर्चों में आनावश्यक वृद्धि हो सकती है।	कुंभ चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है।
कर्क परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।	वृश्चिक आर्थिक-वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।	मीन परिवार में आपसी सहयोग सम्बन्ध बना रहेगा।

संत पीपाजी ने धर्म की अलख जगाई

12 अप्रैल को पीपा जयन्ती पर विशेष.....



मिथीलाल पंचार

राजस्थान के झालावाड़ से थोड़ी दूर गागरोन गढ़ नाम का एक समृद्धशाली नगर था। करीब सात सौ वर्ष पूर्व वहां नरेश कड़वा राव खिंची राज करते थे। राजा कड़वा राव खिंची दानवीर तथा धर्माथ प्रवर्ती के कुशल सासक थे। आदि देवी माता भगवती के परम भक्त थे। साधु संतों की सेवा में सदैव तत्पर रहते। उनकी पत्नी का नाम "लक्ष्मीवती" था। वे भी पति की भांति धार्मिक संस्कारों वाली महिला थीं। एक बार रानी की तबीयत बिगड़ी। राज्य वैध ने जांच के बाद बताया कि महारानी जी गर्भ से ही। वैध राज की बात सुनकर पूरे महल में खुशियां छा गईं। नौ माह बाद चैत्राय पूर्णिमा को शांख बजाने लगे। मन्दिरों ढोल, नगाड़े और घंटियों भी बज उठीं। देवतागण आकाश मार्ग में पुष्पों की वर्षा करने लगे। अचानक ही महल से एक शिशु के रोने का स्वर सुनाई दिया। पता चला महारानी जी ने एक तेजस्वी पुत्र को जन्म दिया है। देवतागणों ने पुष्प वर्षा कर नवजात शिशु का स्वागत किया। सूखे कुएं और तालाब मीठे पानी से तवालब हो उठे। मुझापे पड़ पौधे खिल उठे। पूरे गागरोन वासियों में खुशी

की लहर दौड़ गई। घर घर दीपक जलाए गए। महाराजा ने दास दासियों को उपहार देने के लिए खजाना खोल दिया। दासियों ने बताया कि इतना तेजस्वी और सुंदर शिशु हमने आज तक नहीं देखा। राज पंडितों ने ज्योतिष शास्त्रों का अध्ययन कर राजकुमार का नाम प्रताप सिंह रखने की सलाह दी। राज ज्योतिषी के बताए अनुसार विधि विधान से राज कुमार का नामकरण किया गया। इस मौके देश भर के क्षत्रिय राजाओं को आमंत्रित किया गया। क्षत्रिय कुल के राजाओं ने शिशु को हीरो मोती से जड़े उपहार भेंट कर शुभकामनाएं दीं। ज्योतिषियों ने बताया कि राजकुमार संसार में आपका नाम रोशन करेंगे।



राजकुमार प्रताप सिंह बचपन से ही तेज तर्रार थे। उच्च राजकी शिक्षा-दीक्षा के साथ इनकी रूचि आध्यात्म की ओर भी थी। बचपन से ही साहित्य व कला प्रेमी थे। अपनी कुलदेवी में गहरी आस्था थी। वे मां भगवती से प्रत्यक्ष बात करते थे। युद्ध कौशल में उनका कोई जबाब नहीं था। इस प्रकार धीरे-धीरे समय गुजरता रहा। राजकुमार युवा हुए तो उनके लिए रिश्ते आने लगे। अनेक राजाओं ने अपनी कन्याओं के वर के रूप में प्रतापसिंह को पसंद कर लिया। इस प्रकार 11 राजकुमारियां उनकी जीवन संगिनी बनीं। उन्हीं दिनों युवराज प्रताप सिंह किसी समारोह में भाग लेने टोडारायसिंह नगर गए। वहां हर तरफ प्रताप सिंह की चर्चा होने लगी। प्रताप सिंह को कोई एक बार देख लेता तो उन पर से नजरें हटने का नाम ही नहीं लेती। उनके चेहरे पर सूर्य सा तेज और चन्द्रमा जैसी शीतल आभा दिखाई देती। चलते थे तो लगता था सिंह चला आ रहा है। टोडारायसिंह के नरेश डूंगरसिंह की एक

पुत्री थी। जिसका नाम पद्मावती था। पद्मावती धार्मिक संस्कारों वाली कन्या थी। टोडारायसिंह के नरेश डूंगरसिंह ने प्रताप सिंह को देखा तो मन ही मन सोचने लगे कि उनकी लाडली बेटियां के लिए प्रताप सिंह से बढ़कर कोई दूसरा वर नहीं मिल सकता। इधर शहर भ्रमण के दौरान नगरवासियों ने राजकुमार प्रताप सिंह को देखा तो उन्हीं की चर्चा होने लगी। धीरे धीरे दासियों के द्वारा यह बात राजकुमारी पद्मावती तक पहुंच गई। दूसरे ही दिन राजकुमारी पद्मावती ने भी समारोह में प्रताप सिंह को देखा तो देखती रह गईं। वह मन ही मन राजकुमार प्रताप सिंह को अपना वर मान बैठी। कुछ दिनों के बाद टोडारायसिंह

अचानक ही निधन हो गया। हर तरफ मातम छा गया। उस समय राजकुमार प्रताप सिंह की उम्र मात्र 20 वर्ष की थी। सभी राजदरबारियों ने सभा कर जेठ पुत्र प्रताप सिंह के राज्याभिषेक करने का निर्णय ले लिया। महाराजा कड़वा राव के देहांत के बाद संवत् 1400 में युवराज प्रताप सिंह का गागरोन के राजा के रूप में राज्याभिषेक हुआ। राजपाठ संधालने के कुछ ही समय में उनकी एक कुशल शासक के रूप में पहचान बन गई। उनके राज काल में गागरोन किला एक समृद्ध न्यासत बन चुका था। इधर मालवा के मुस्लिम शासकों की बुरी नजर इस पर पड़ी। वे गागरोनगढ़ पर फतह करने की योजनाएं बनाने लगे। मुस्लिम शासकों ने गागरोन जीतने की मंशा से हमला किया तो प्रताप सिंह ने उनकी सेना को मुंह तोड़ जवान ही नहीं दिया बल्कि खड़े-खड़े कर मारा। फिरोजशाह तुगलक, मलिक जर्दफिरोज व लल्लन पटान जैसे योद्धाओं को पराजित कर पूरे भारतवर्ष में अपनी वीरता का लोहा मनवाया। बाद में मुस्लिम शासकों के मन में प्रताप सिंह के नाम का ऐसा खौफ बैठ गया कि पलट कर गागरोन की तरफ देखा तक नहीं। कुछ समय बाद महाराजा प्रताप सिंह ने संसारिक राजपाठ तथा संसारिक मोह-माया का त्याग कर दिया। पति के साथ ही सबसे छोटी रानी पद्मावती ने भी संन्यास ले लिया। जगद्गुरु रामानंदाचार्य ने प्रताप सिंह को पीपा तथा पद्मावती को सीता नाम प्रदान किया। जगद्गुरु रामानंदाचार्य से दीक्षा लेकर दोनों जगत कल्याण के लिए देशांतर पर निकल पड़े। भारतभर का भ्रमण करते लोगों में धर्म की अलख जगाई।

-मिथीलाल पंचार, जोधपुर

‘समय आ गया है, हम अपने फूड प्रोडक्ट्स को न्यूट्रिशनल वैल्यू के आधार पर वर्गीकृत करें’

केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को सार्वजनिक क्षेत्रों में उनके नवाचारों और योगदान के लिए डी. लिट की मानद उपाधि से नवाजा

उदयपुर, (कासं)। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने शुक्रवार को जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीडटू ब्री विश्वविद्यालय की ओर से आयोजित 20 वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। उन्होंने कहा कि अमृत पीढ़ी को विकसित भारत के निर्माण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग, साइबर सिक्योरिटी, एआई-वेस्ट, जीनोम सीक्वेंसिंग, रोबोटिक्स, इंफॉर्मेशन साइंसेज, डेटा साइंसेज, ऑटोमेशन और मेटल हेल्थ जैसे क्षेत्रों में अपनी भूमिका सुनिश्चित करनी होगी। शेखावत ने कृषि के क्षेत्र भावी संभावनाओं और प्रयासों को रेखांकित करते हुए कहा कि भारत में अब भोजन को मात्र मात्रा में नहीं, बल्कि उसकी न्यूट्रिशनल वैल्यू के आधार पर मापा जाना चाहिए। अब समय आ गया है कि हम अपने फूड प्रोडक्ट्स को न्यूट्रिशनल वैल्यू के आधार पर वर्गीकृत करें। आने वाले समय में भारत की शहरी आबादी का आधा हिस्सा अपना भोजन घर में नहीं, बल्कि इंडस्ट्री से प्राप्त करेगा। फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में भारत आज भी पीछे है, हम कुल उत्पादन का मात्र 2 फीसदी ही प्रोसेस कर पा रहे हैं। कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगेंद्रवोत ने विद्यापीठ की विकास यात्रा को बतते हुए कहा कि तीन रूपये एवं पांच कार्यकर्ताओं से स्थापित इस संस्थान ने आज वटवृक्ष का रूप ले



समारोह में मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को एमबीए की डिग्री में स्वर्णपदक प्रदान किया।

- जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीडटू ब्री विश्वविद्यालय की ओर से 20वां दीक्षांत समारोह आयोजित
- समारोह में 101 मेधावियों को स्वर्ण पदक और 97 को पीएचडी उपाधि प्रदान की

लिया है जिसका सालाना 60 करोड़ का बजट है और 10 हजार से अधिक विद्यार्थी नियमित रूप से अध्ययनरत हैं। उन्होंने संस्थान के सफलता का श्रेय विवि के समर्पित कार्यकर्ताओं को दिया। उन्होंने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत उन्नति नहीं, बल्कि सामाजिक उत्थान भी है इसलिए दीक्षांत समारोह के दौरान विद्यार्थियों को यह संकल्प दिलाया जाता है कि वे सत्य और न्याय के मार्ग पर चलेंगे, समाज और राष्ट्र की सेवा करेंगे, अपने ज्ञान का उपयोग सद्भाव और मानवीय मूल्यों के विकास के लिए करेंगे। परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन ने बताया कि अतिथियों द्वारा पीएचडी धारकों को उपाधियां एवं विभिन्न स्नातक-स्नातकोत्तर परीक्षाओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए। इस अवसर पर 97 पीएचडी धारकों को उपाधियां प्रदान की गईं जिसमें 65 छात्राएं और 101 मेधावी विद्यार्थियों को गोल्ड मेडल प्रदान किए गए, जिसमें 65 छात्राएं शामिल हैं। समारोह की शुरुआत में केंद्रीय मंत्री को एमसीसी कैडेट्स द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया। उदयपुर सांसद मनलाल रावत एवं एमपीयूएटी के कुलपति प्रो. अजित कुमार कर्नाटक ने भी समारोह को संबोधित किया। कुलाधिपति प्रो. भंवरलाल गुर्जन ने कहा कि समय के साथ शिक्षा के स्वरूप में भी बदलाव करना होगा। राजधानी देने वाली शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करना होगा। रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली ने बताया कि समारोह के विशेष आकर्षण के रूप में केंद्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत को सार्वजनिक क्षेत्रों में उनके नवाचारों और योगदान के लिए डी. लिट की मानद उपाधि से नवाजा गया। उपाधि प्रदान करते समय सभागार तालियों से गूंज उठा। शेखावत ने इस मौके पर संस्था के सामाजिक सरोकारों और सामुदायिक कार्यों को प्रेरणादायी बताया। इस

अवसर पर मेवाड़ राजपरिवार के डॉ. लक्ष्यराजसिंह मेवाड़ को एमबीए की डिग्री में स्वर्णपदक प्रदान किया गया। कर्नल विनोद कुमार बांगरवा को भी पीएचडी प्रदान की गई। समारोह में विधायक दिप्ति मोहेश्वरी, निवृत्ति कुमारी मेवाड़, अशोक मेतवाल, डॉ. रश्मि बोहरा, भाजपा के जिला अध्यक्ष गजपाल सिंह राठौड़, पूर्व विधायक बी. एल. चौधरी, रजिस्ट्रार डॉ. तरुण श्रीमाली, परीक्षा नियंत्रक डॉ. पारस जैन, डॉ. युवराज सिंह राठौड़, वरिष्ठ भाजपा कार्यकर्ता प्रमोद सामर, पारससिंघवी, कुलदीपसिंह, डॉ. सपना श्रीमाली, सोम जारोली, प्रतीक वर्मा, अनिल हरकावत, अजय डांगी सहित विद्यापीठ के डीन, डायरेक्टर सहित शहर कि गणमान्य नागरिक और विद्यार्थी मौजूद थे।

तेज आंधी ने पाटन कस्बे और आसपास के इलाकों में तबाही मचाई, सैकड़ों पेड़ गिरे

पाटन, (निंसां)। शुक्रवार शाम करीब छह बजे अचानक आई तेज आंधी ने पाटन कस्बे और आसपास के इलाकों में जमकर तबाही मचाई। तेज रफ्तार हवाओं ने सैकड़ों पेड़ों को धराशायी कर दिया, वहीं कई घरों और दुकानों की छतों से टिनशेड उड़कर दूर जा गिरे। तेज आंधी के चलते कस्बे के कई इलाकों में बिजली के पोल और तार टूट गए, जिससे विद्युत आपूर्ति पूरी तरह बाधित हो गई। विशेषकर धांधेला रोड पर एक विशाल नीम का पेड़ बीच सड़क पर गिर गया, जिससे काफी समय तक यातायात पूरी तरह बाधित रहा। स्थानीय लोगों ने मिलकर पेड़ को हटाया, तब जाकर रास्ता सुचारु हो पाया।



पाटन सहित आसपास में तेज रफ्तार हवाओं ने सैकड़ों पेड़ों को धराशायी कर दिया।

कई घरों और दुकानों की छतों से टिनशेड उड़कर दूर जा गिरे

कुछ इलाकों में दीवारों भी आंधी के दबाव से दरक गईं। दुकानदारों का कहना है कि उनके प्रतिष्ठानों में रखे सामान को भी नुकसान हुआ है, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में कई कच्चे मकान आंधी की चपेट में आकर क्षतिग्रस्त हो गए। बिजली विभाग के कर्मचारियों ने मौके पर पहुंचकर

पोल और तारों की मरम्मत का काम शुरू कर दिया है, परंतु देर शाम तक अधिकांश क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति बहाल नहीं हो पाई थी। स्थानीय प्रशासन ने आमजन से अपील की है कि वे खराब मौसम के दौरान सतर्क रहें और बिजली के टूटे तारों व पेड़ों के पास जाने से बचें।

हनुमानगढ़ में मेघ गर्जन के साथ बारिश हुई

हनुमानगढ़, (निंसां)। यहां शुक्रवार को नए पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से

मौसम में अचानक बदलाव आया। सुबह से चल रही हवाओं के कारण लोगों को गर्मी का कम एहसास हुआ। दोपहर में आसमान में बादल छाए और मेघगर्जन के साथ तेज हवाएं चलीं। हल्की बारिश ने लोगों को गर्मी से राहत दी। तेज हवाओं के कारण शहरी और

ग्रामीण क्षेत्रों में कई घंटों तक बिजली आपूर्ति बाधित रही। हनुमानगढ़, संगरिया और पीलीबंगा क्षेत्र में गर्जना के साथ हल्की बारिश और बूंटाबांटी हुई। इससे मौसम सुहावना हो गया। पिछले एक सप्ताह से जिले में लगातार गर्मी का प्रकोप बना हुआ था। इससे विशेषकर दोपहिया वाहन सवारों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। मौसम विज्ञान केंद्र जयपुर के अनुसार नए पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से अगले 1-2 दिन तक कुछ क्षेत्रों में दोपहर बाद मेघ गर्जन और आंधी-बारिश की संभावना है। विभाग ने चेतावनी दी है कि 14 अप्रैल को पश्चिमी विक्षोभ का प्रभाव समाप्त हो जाएगा। इसके बाद एक बार फिर से हीट वेव की स्थिति बन सकती है।